EQDJDRP

संकलित परीक्षा – I (2015-16)

हिन्दी 'अ'

कक्षा –X

र्धारित समय : 3 घण्टे | अधिकतम अंक : 90

र्देश :

) इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं – क, ख, ग और घ।

) चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

) यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रमश: दीजिए।

खण्ड-क

(अपठित बोध)

नम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए—

वशेषज्ञ कहते हैं कि शहरीकरण को बेशक रोका नहीं जा सकता, लेकिन शहरों में आकर बसने वाले छोटे भाषायी रिवारों और समुदायों की भाषाओं को ज़िंदा रखने के लिए माहौल ज़रूर मुहैया कराया जाना चाहिए। अंडमान के ावरा समुदाय को बचाने के लिए कदम बढ़ा चुकी सरकार क्या इस दिशा में भी आगे बढ़ सकती है ? शहरीकरण भले ो विकास का पैमाना हो, पर यह भाषाओं का श्मशानगृह भी साबित हो रहा है। इससे भी आगे यदि यह कहा जाए कि ाहरीकरण से भारत की मूल संस्कृति को भी बहुत हानि हुई है तो यह और अधिक हृदय-द्रावक प्रतीत होगा क्योंकि ससे मानव मशीन बनता जा रहा है, मानवता डरकर भाग रही है।

tech.Vivek5 @gmail.com

(i) 'शहरीकरण' का तात्पर्य है —

(क) शहरों की आबादी बढ़ना।

(ख) शहरों को बचाना।

(ग) शहर के रूप में बसाने-बढ़ाने को महत्व देना।

(घ) शहरों की सजावट।

JSUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner

(ii) शहरीकरण से भाषा के क्षेत्र में क्या हानि हो रही है ?

(क) स्वभाषा की जगह अंग्रेज़ी प्रभाव जमा रही है।

(ख) हम अपनी भाषा का विकास कर रहे हैं।

(ग) क्षेत्रीय भाषाएँ मिटती जा रही हैं।

(घ) परस्पर वार्तालाप बंद हो जाने से क्षेत्रीय भाषाएँ मर रही हैं।

(iii) शहरीकरण से क्षतिग्रस्त होने वाली एक मुख्य धरोहर है, हमारी —

(क) सभ्यता। (ख) ज़िंदादिली।

(ग) संस्कृति। (घ) साहसी प्रवृत्ति।

(iv) "हृदय-द्रावक" का आशय है —

(क) मन को दुखी करने वाली।

(ख) मन व हृदय को बहुत वेदना पहुँचाने वाली।

(ग) व्यक्ति को चोट पहुँचाने वाली।

(घ) निराशाभरी।

(v) 'शहरीकरण ही विकास का पैमाना है" वाक्य है —

(क) संयुक्त वाक्य। (ख) मिश्र वाक्य।

(ग) जटिल वाक्य। (घ) सरल वाक्य।

2 **निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही विकल्प चुनकर लिखिए—** 5

ऐसे ही हमारा ज्ञान, धन, बल जग औरों के काम आए, तो हमें अपने जीवन की सार्थकता का बोध होता है। हमें सब कुछ औरों से मिला है। जीवन, प्राण-वायु (वातावरण), नाम, कुल, गोत्र, गाँव-नगर, प्रान्त, देश सब कुछ हमें मिला है। फिर 'त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये' में हिचक क्यों ? 'तेरा तुझको अर्पण' कहने और करने में झिझक क्यों ? हमने तिजोरी पर अज्ञान का ताला लगा रखा है ? विवेक की कुंजी का इस्तेमाल कभी करते नहीं। अगर विवेक

JSUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner

की कुंजी हो, तभी इस धन का सार्थक उपयोग कर सकेंगे।

जब विवेक जाग्रत हो जाएगा, तब आत्म-प्रचार की बात मन में नहीं आएगी। आत्म-विस्तार के पथ पर चलने वाले पथिक को आत्म-प्रचार करने की जरूरत नहीं होती। मनुष्य में आत्म-विस्तार की प्रवृत्ति विकसित होते ही वह सर्वत्र प्रशंसा पाने लगता है। उसकी ख्याति स्वतः चतुर्दिक फैल जाती है। वह सदैव सुख के सागर में गोते लगाता रहता है और इससे भी ऊपर उठकर वह निर्द्वन्द्व-निर्विकार हो जाता है। इसके बाद और क्या शेष रह जाता है ?

(i) आत्म-प्रचार से मुक्त होकर अपने को पहचानने तथा आत्म-विस्तार की प्रवृत्ति विकसित होने पर व्यक्ति हो जाता है, —

(क) द्वंद्व तथा विकारों से मुक्त।

(ख) सचेत और जाग्रत।

(ग) दोषमुक्त तथा पवित्र।

(घ) निराकार परब्रह्म के समान।

(ii) आत्म-प्रचार से मुक्त होने के लिए परमावश्यक है, —

(क) अध्ययनशील होना।

(ख) परोपकारी होना।

(ग) चिंतारहित होना।

(घ) आत्म-विस्तार और आत्मज्ञान का विवेक जाग्रत होना।

(iii) "त्वदीयं वस्तु गोविन्द ! तुभ्यमेव समर्पये" का भाव है —

(क) सब कुछ हमें मिला है फूल रहा हूँ।

(ख) देश की चीजें देश को समर्पित।

(ग) तेरा तुझको अर्पण तथा यह सभी आपको ही समर्पित है।

(घ) सब कुछ गोविंद का है।

SUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner

(iv) हमारा जीवन तभी सार्थक समझा जा सकता है जब हम, अपना ज्ञान, धन, बल —

(क) अपने पास सुरक्षित रखें।

(ख) बर्बाद न करें।

(ग) परोपकार में लगाएँ।

(घ) सोच-समझकर ही खर्च करें।

(v) हमें हमारा जीवन, प्राणवायु, नाम, कुल, गोत्र, प्रांत, नगर, गाँव आदि सभी प्राप्त हुए हैं, —

(क) हमारे प्रयास से।

(ख) पूर्वजों से।

(ग) भिक्षा-स्वरूप

(घ) ईश्वर तथा अन्य स्रोतों से।

3 निम्नलिखित पद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए तथा दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर वाले विकल्प चुनकर लिखिए। 5

रात में जब सोया था

सोते सोते एक सपना बोया था

बस एक दो हफ़्ते में

तैयार होगी अरहर खेतों में

और कटेगी मसूर

बिकेगी बाजार में

हो जायेगी रेहन मुक्त सब जमीन

जो बच पायेगा

उसके कुछ हिस्से से मकान बन जायेगा

JSUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner

फिर मार्च के महीने में

जवान बेटी का रिश्ता तय करना है

बस फिर कुछ दिन के बाद आयेगा चैत और वैशाख

और गेहूँ की फसलें बेचकर

चुकाऊँगा कर्ज और बचा लूंगा साख

बस फिर क्या एक ही काम और करना है

बुड्ढे, बुड्ढी को साथ लेकर चारों धाम की यात्रा करना है

उनको दिया वायदा भी पूरा हो जायेगा

मरने से पहले बेटा तीरथ करा दो

यह सपना भी पूरा हो जायेगा

और देर रात सोया था इन सपनों के साथ

(i) कविता में वर्णन है, एक,-

(क) व्यापारी के स्वप्न का।

(ख) लेखक के सपने का।

(ग) कवि की कल्पना का।

(घ) किसान की वस्तुस्थिति का।

(ii) किसान के सपने की महत्वपूर्ण बात थी,-

(क) सुन्दर सपने को देखना।

(ख) अरहर और मटर का तैयार होना।

(ग) तैयार फसल को बाजार में बेचना।

(घ) अन्न को बेचकर प्राप्त राशि से जमीन को गिरवी से छुड़ाना आदि

JSUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner

कल्पनाएँ।

(iii) किसान गेहूँ बेचकर प्राप्त धन-राशि से-

(क) अच्छी खेती करेगा।

(ख) महाजन के कर्ज से मुक्त होगा।

(ग) सरकारी टैक्स देगा।

(घ) सिंचाई विभाग की अदायगी करेगा।

(iv) 'बस फिर क्या एक ही काम और करना है' कौन-सा महत्वपूर्ण काम था?

(क) कर्ज चुकता करना।

(ख) गेहूँ की फसल बोना।

(ग) माँ-बाप को तीर्थ-यात्रा कराना।

(घ) बिटिया का ब्याह रचाना।

(v) कविता परिचायक है किसान की,-

(क) खुशहाली की। (ख) बदहाली की।

(ग) ऋणमयी दशा की। (घ) ऋणमुक्त दशा की।

4 निम्नलिखित पद्यांश पढ़ें तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के लिए सही विकल्प चुनकर लिखें : 5

क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या, जो दन्तहीन
विषहीन विनीत सरल हो।
तीन दिवस तक पंथ माँगते

SUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner

रघुपति सिन्धु किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छन्द
अनुनय के प्यारे-प्यारे।
उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर में,
उठी अधीर धधक पौरूष की
आग राम के शर से।
सिन्धु देह धार 'त्रहि-त्रहि'
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की
बँधा मूढ़ बन्धन में।
सच पूछो तो शर में ही
बसती है दीप्ति विनय की,
सन्धि-वचन संपूज्य उसी का
जिसमें शक्ति विजय की।

JSUNIL TUTORIAL

(i) क्षमा किसको शोभा देती है?

(क) विषयुक्त सर्प को (ख) सरल व्यक्ति को

(ग) शक्ति सम्पन्न व्यक्ति को (घ) निर्बल को

(ii)

(क) लक्ष्मण (ख) सुग्रीव

(ग) विभीषण (घ) राम

समुद्र के किनारे खड़े होकर कौन रास्ता माँगा रहा है

Scanned by CamScanner

(iii) 'अनुनय के प्यारे छन्द पढ़ने' से क्या आशय है?

(क) अच्छे गीत गाना (ख) भजन-कीर्तन करना

(ग) नम्रता से विनय करना (घ) दोहा-छन्द पढ़ना

[redacted]

(ग) उपमा (घ) यमक

(v) उपर्युक्त पद्यांश का उपयुक्त शीर्षक है-

(क) विषधार सर्प (ख) भगवान राम और सागर

(ग) जीवन में शांति का महत्व (घ) जीवन में शक्ति की महत्ता

खण्ड - ख

(व्यावहारिक व्याकरण)

5 निम्नलिखित वाक्यों के रचना के आधार पर भेद लिखिए। 3

(क) पिता जी की इच्छा थी इसलिए मैं आपसे मिलने चला आया।

(ख) वह ज्वर से पीड़ित होने के कारण स्कूल नहीं आया।

(ग) राजू मेरे घर आया था क्योंकि उसे संस्कृत पढ़नी थी।

6 निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार वाच्य-परिवर्तन कीजिए। 4

(क) हिरण अब नहीं दौड़ता। (भाववाच्य में)

(ख) मीना द्वारा पुस्तक पढ़ी जाती है। (कर्तृवाच्य में) पुस्तक को मीना पढ़ती है।

(ग) गीता द्वारा लिखा नहीं जाता। (कर्मवाच्य में)

JSUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner

(घ) तुम घर पर नहीं रह सकते ? (कर्मवाच्य में)

7. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित का पद-परिचय लिखिए। 4

(क) मैं कल देहरादून जाऊँगा।

(ख) पिछले साल भयंकर सूखा पड़ा था।

(ग) तुम्हारी पुस्तकें मैंने अलमारी में रख दी हैं।

(घ) हरीश की किताबें अस्त-व्यस्त रहती हैं।

8. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए 4

(क) 'शृंगार' तथा 'भयानक' रसों के स्थायी भाव लिखिए।

(ख) निम्नांकित पद्यांशों में कौन-सा रस है ? बताइए।

(i) गंदे कटे-पिटे हाथ, जख्म से फटे हुए हाथ।
खुशबू रचते हैं हाथ, खुशबू रचते हैं हाथ।।

(ii) यह बड़ा पाप का हमें फोड़ना होगा
अधिकारवाद का किला खड़ा छाती पर
करके प्रहार यह किला तोड़ना होगा।।

JSUNIL TUTORIAL

खण्ड-ग

(पाठ्य-पुस्तक)

9. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए। (2+2+1) 5

फ़ादर को याद करना एक उदास शांत संगीत को सुनने जैसा है। उनको देखना करुणा के निर्मल जल में स्नान करने जैसा था और उनसे बात करना कर्म के संकल्प से भरना था। मुझे 'परिमल' के वे दिन याद आते हैं जब हम सब

Scanned by CamScanner

एक पारिवारिक रिश्ते में बँधे जैसे थे जिसके बड़े फ़ादर बुल्के थे। हमारे हँसी-मज़ाक में वह निर्लिप्त शामिल रहते, हमारी गोष्ठियों में वह गंभीर बहस करते, हमारी रचनाओं पर बेबाक राय और सुझाव देते और हमारे घरों के किसी भी उत्सव और संस्कार में वह बड़े भाई और पुरोहित जैसे खड़े हो हमें अपने आशीषों से भर देते। मुझे अपना बच्चा और फ़ादर का उसके मुख में पहली बार अन्न डालना याद आता है और नीली आँखों की चमक में तैरता वात्सल्य भी- जैसे किसी ऊँचाई पर देवदारु की छाया में खड़े हों।

(क) ''परिमल के वे दिन याद आते हैं'' का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ख) ''कर्म के संकल्प से भरना'' का भाव बताते हुए लिखिए कि यह पंक्ति लेखक ने किस महापुरुष के विषय में लिखी है?

(ग) लेखक ने फ़ादर किन्हें कहा है और वे उत्सवों तथा संस्कारों में लेखक को किस तरह की भूमिका अदा करते हुए लगते थे?

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-

10(i) बालगोबिन की पुत्रवधू के चरित्र की विशेषताओं में से दो प्रमुख विशेषताओं का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए। 2

(ii) ''शुक्रिया, इस वक्त तलब महसूस नहीं हो रही, मेदा भी ज़रा कमज़ोर है, किबला शौक फरमाएँ।'' वाक्य में किस भाषा की शब्दावली प्रयुक्त हुई है और क्यों? 2

(iii) फ़ादर कामिल बुल्के ने प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग से 1950 में कौन-सा विशिष्ट कार्य पूरा किया था? वे किस भाषा के मर्मज्ञ विद्वान के रूप में जाने जाते हैं? 2

(iv) एक बार फिर कस्बे से गुजरते हुए हालदार साहब को चौराहे की ज्यादातर दुकानें तथा पान की दुकान भी बंद मिली तो उन्हें क्या असुविधा हुई होगी तथा उन्होंने कैसा अनुभव किया होगा? 2

(v) फादर कामिल बुल्के ने सन्यासी की परम्परागत छवि से अलग एक नई छवि प्रस्तुत की है कसे? 2

JSUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner

11 निम्नलिखित पद्यांश को पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए — (2+2+1) 5

डार द्रुम पलना बिछौना नव पल्लव के,
सुमन झिंगूला सोहै तन छवि भारी दै।
पवन झूलावै, केकी-कीर बतरावैं 'देव',
कोकिल हलावै-हुलसावै कर तारी दै।।
पूरित पराग सों उतारो करै राई नोन,
कंजकली नायिका लतान सिर सारी दै।
मदन महीप जू को बालक बसंत ताहि,
प्रातहि जगावत गुलाब चटकारी दै।।

(क) वसंत को कवि ने किसका बालक बताया है और उसे सवेरे कौन किस रूप में जगाता है?

(ख) वसंत रूपी बालक के लिए प्रकृति ने बिछौना कैसा बिछाया है और उसके लिए किन साधनों से पहनने का वस्त्र तैयार किया है?

(ग) पवन, मोर और तोता वसंत - रूपी शिशु को किस तरह रिझा और खिला रहे हैं?

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए-

12(i) 'जै जग-मंदिर-दीपक सुंदर, श्रीब्रजदूलह 'देव' सहाई'' पंक्ति में निहित भाव-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए। 2

(ii) अपनी बात कहने की अपेक्षा प्रसाद क्या करना अधिक उपयुक्त मानते हैं? 'आत्मकथ्य' कविता के आधार पर लिखिए। 2

(iii) ''देखते तुम इधर कनखी मार और होतीं जब कि आँखें चार'' पंक्ति में निहित भाव को स्पष्ट करते हुए बच्चे की मनोवैज्ञानिक प्रवृत्ति पर प्रकाश डालिए। 'दंतुरित मुसकान' के आधार पर उत्तर दीजिए। 2

(iv) 'उत्साह' कविता में कवि ने बादलों के किस स्वरूप का वर्णन किया है? स्पष्ट कीजिए। 2

(v) गोपियों ने योग-संदेश सुनकर कृष्ण पर अनेक आरोप लगाये और आशंकाएँ व्यक्त कीं। आपके अनुसार श्रीकृष्ण ने योग-संदेश क्यों भिजवाया होगा? 2

JSUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner

13 देश के छोटे-बड़े सभी पूर्व महापुरुषों की नाकें जॉर्ज पंचम की नाक से बड़ी निकलने पर मूर्तिकार ने क्या उपाय सुझाया और उस जटिल समस्या का समाधान किस प्रकार हुआ? आप इस समाधान के विषय में अपने विचार व्यक्त कीजिए। 5

खण्ड-घ

(लेखन)

दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200-250 शब्दों में निबंध लिखिए।

14(i) **पुस्तकालय** 10

- भूमिका
- पुस्तकालय का अर्थ व प्रकार
- पुस्तकालय की उपयोगिता
- पुस्तकालय से लाभ
- उपसंहार

(ii) **व्यायाम और जीवन** 10

- प्रस्तावना
- व्यायाम का स्वरूप तथा महत्त्व
- व्यायाम से लाभ
- व्यायाम विहीन व्यक्ति की स्थिति
- उपसंहार

(iii) **अनुशासित जीवन-सुखी जीवन** 10

- प्रस्तावना
- उक्ति का आशय
- स्वरूप
- अनुशासित व्यक्ति की स्थिति

JSUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner

- लाभ तथा उपयोगिता
- राष्ट्र-निर्माण की आवश्यकता
- उपसंहार

15. छात्रों के लिए अधिक खेल-सामग्री उपलब्ध कराने का अनुरोध करते हुए अपने प्रधानाचार्य महोदय को प्रार्थना-पत्र लिखिए। 5

16. निम्नांकित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और लगभग एक तिहाई शब्दों में उसका सार लिखिए। 5

परिश्रम को सफलता की कुंजी माना गया है। जीवन में सफलता पुरुषार्थ से ही प्राप्त होती है। कहा भी है कि — 'उद्योगी पुरुष सिंह का लक्ष्मी वरण करती है।' जो भाग्यवादी हैं उन्हें कुछ नहीं मिलता। वे हाथ-पर-हाथ धरे बैठे रह जाते हैं। अवसर उनके सामने से निकल जाता है। भाग्य कठिन परिश्रम का ही दूसरा नाम है।

प्रकृति को ही देखिए। सारे जड़-चेतन अपने कार्य में लगे रहते हैं। चींटी को भी पल-भर चैन नहीं। मधुमक्खी जाने कितनी लंबी यात्रा कर बूँद-बूँद मधु जुटाती है। मुरगे को सुबह बाँग लगानी ही है। फिर मनुष्य को बुद्धि मिली है, विवेक मिला है। निठल्ला बैठे तो सफलता की कामना करना व्यर्थ है।

-oOoOoOo-

JSUNIL TUTORIAL

Scanned by CamScanner